बूँद से बादल बादल से किला...

चित्र व कथा: हरजीत

हिमाचलप्रदेश में पहाड़ पर बसा एक शहर है धर्मशाला। वहीं अस्सू और कूनी अपनी माँ के साथ रहते हैं। कुछ अंकों पहले तुमने जो माँ की डायरी पढ़ी थी न, याद आया! बस, तो हम उन्हीं अस्सू-कूनी और उनकी माँ हरजीत की बात कर रहे हैं। अस्सू-कूनी ने अपनी माँ के साथ या यह कह लो कि माँ ने अस्सू-कूनी के साथ ढेर सारी कहानियाँ बनाई हैं, उनके चित्र बनाए हैं। यहाँ उन्हीं ढेर सारी कहानियों में से एक तुम्हें दिखाने-सुनाने वाले हैं।

***यह उन दिनों की** बात है जब अस्सू सात का और **कूनी चार साल एक** महीने का हुआ था। उनका दिन **बड़ी अजब चीज़ों** से शुरु होता था। शुरु होकर टेढ़े-**मेढ़े रास्तों से होता**-हुआता आखिर में ढल जाता। माँ **रोज़ सुबह पूछती,** "आज दिन की किश्ती का रुख किधर हो?"*

एक दिन माँ के ऐसा पूछने पर दोनों ने कहा, "आज तो चित्र बनाने का मन है।" और दोनों चित्र बनाने लगे। अचानक कूनी की कूची से काले रंग की एक बूँद कागज़ पर जा टपकी। कागज़ पर एक धब्बा-सा बन गया था।

यह देख कूनी रोने लगा।

उसका रोना सुनकर माँ आई और बोली, "क्या हुआ?" रोते हुए कूनी ने कहा, "माँ, कागज़ पर धब्बा पड़ गया।" माँ बोली, "चलो, इसमें तुम्हारी तस्वीर ढूँढते हैं।" माँ ने ब्रश को गीला कर धब्बे पर तीन-चार बार इस तरह फेरा कि उसमें से एक बादल झाँकने लगा।

अचानक अस्सू बोला, "माँ, देख **मिल** गई तस्वीर। ऐसा लग रहा है जैसे **बारिश** की किसी शाम कोई जना दूर खड़ा होकर शहर को देख रहा है। और पानी में शहर की परछाईं नज़र आ रही है।"

तभी कूनी भी बोला, "माँ, इसमें तो और भी तस्वीरें हैं। देखो बादलों की परछाईं भी दिख रही है।" यह तस्वीर उन्होंने अपने कमरे में लगा ली। अब वो आते-जाते या जाते-आते इस तस्वीर को देखते रहते। उनके घर आने-जाने वालों को भी इस तस्वीर में अलग-अलग चीज़ें नज़र आने लगीं। किसी को इसमें किसी पुराने किले का खंडहर दिखता तो किसी को पानी में खड़ा जहाज़। कोई कहता, "इस तस्वीर में बारिश की शाम की छाया है।"

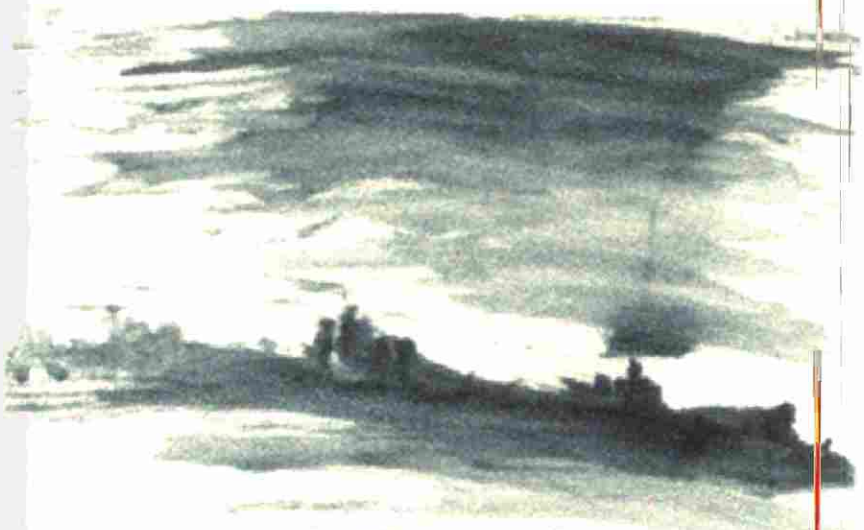

तुम्हें इस तस्वीर में क्या दिखता है?